College copy

To,

The Joint Secretary,
University Grants Commission
Western Regional Office,
Pune - 411007.

Hon. COPY

ईक्किसवी सदी की हिंदी महिला कथा साहित्य मे स्त्री विमर्श

A Minor Research Project

Submitted to

University Grants Commission,
Regional office, West Zone, Pune.

Through

Director,
Board of college and University Development.
Swami Ramanand Teerth Marathawada University,
Nanded.

in

Acedemic Year
2015 - JULY

Submitted by

Dr. Anjali Vithalrao Chaudhary
(Associate Professor & Head of the department of Hindi)
Khorshedbanu R. Mewawala Mahila Mahavidyalaya, Nanded.

Forwarded by

Dr. Kamlajkar Vijaya D.
Principal
Khorshedbanu R. Mewawala Mahila Mahavidyalaya, Nanded.

Project Summery:

प्रथम अध्याय :–स्त्री विमर्श – अवधारणा एवं स्वरुप
द्वितीय अध्याय :–व्यक्तित्व एवं कृतित्व
तृतीय अध्याय:–महिला कथा साहित्य में स्त्री विमर्श
चतुर्थ अध्याय:–पाश्चात्य संस्कृति एवं स्त्री विमर्श
पंचम अध्याय:– क्या है आखिर में ....?

प्रथम अध्याय:– स्त्री विमर्श अवधारणा एवं स्वरुप

इस अध्याय में स्त्री विमर्श का व्यापक स्वरुप लिया गया है, जिसमें अर्थ, कई विद्वानों द्वारा दी गई परिभाषाएँ, और अवधारणा पर प्रकाश डाला गया है। जो सारांश में इस प्रकार है।

समय और समाज की आहट और करवट को पहचानते हुए उसके सभी सार्थक संवादों को कायम रखना रचना व रचनाकार दोनों के लिए आवश्यक होता है। हम नही कह सकते कि स्त्री विमर्श उत्तरशती का स्त्री विमर्श है बल्कि यह तो सदियों से चली आ रही अस्तित्व और अस्मिता की लडाई है। स्त्री को अपना अस्तित्व बचाने के लिए, अस्मिता की रक्षा करने के लिए तथा अधिकारों को प्राप्त करने के लिए, सदैव ही जंग लड़नी पडी है। क्योंकि पितृसतात्मक समाज सदैव ही उसे हाशिये पर रखता आया है।

स्त्री सदैव ही पराजित व पराधीन रही है। बहुत पहले वह घर का कोई कोना मांगती थी, किंतु आज उसे 'स्पेस' चाहिए। जब वह कोई चीज प्रार्थना करके मांगती है, किंतु न मिलने पर छीन भी लेती है क्योंकि नम्र रहकर उसने बहुत कुछ सहा। इस बात का संकेत – महादेवीजी ने बहुत पहले दिया था।

"कीर का प्रिय आज पिंजर खोल दो।
श्रृंखलाएँ ताप के उर से गलेगी।
भितिया यह लोह के रज में मिलेगी।"

उन्हे चिंता है सदियों पुरानी ये लोहे की दीवारें यूँ सहज ही, थोडे से ताप से गलने वाली नही है, इसके लिए तो एक प्रंचड ताप की आवश्यकता है, जो औरत स्वयं देगी। और शायद यह आक्रमक स्थिति, यह क्रांति इसी ताप को बनाने के लिए हुई है। स्त्री गुणों की खान होने के बावजूद भी पुरूष उसे कभी समझ नही पाया। उसके साथ हमेशा से ही वह छदम का खेल खेलता आया है। इसीलिए शायद स्त्री विमर्श का उदभव हुआ हो।

द्वितीय अध्याय:– व्यक्तित्व एवं कृतित्व

प्रस्तुत अध्याय में पूरे प्रकल्प के लिए ली गई सभी लेखिकाओं के प्रखर व्यक्तित्व एवं प्रंचड व कालजयी साहित्य का परिचय संक्षेप में किया गया है।

(1)ममता कालिया
(2)मृदुला गर्ग
(3)मैत्रयी पुष्पा
(4)कृष्णा सोबती
(5)कृष्णा अग्निहोत्री
(6)चित्रा मुदगल
(7)उषा प्रियंवदा
(8)मालती जोशी
(9)दीप्ति खण्डेलवाल

तृतिय अध्याय :– महिला लेखकों के कथा साहित्य में व्यक्त स्त्री विमर्श

महिला लेखकों के कथा साहित्य में व्यक्त स्त्री विमर्श के अंतर्गत सामाजिक और पारिवारिक स्तर पर जिस स्वरूप में स्त्री विमर्श व्यक्त हुआ है, वह तो हमने पाठकों के समक्ष रखा ही है। इसके अतिरिक्त किसी–किसी ने राजनैतिक स्तर तथा आर्थिक स्तर पर जो स्त्री विमर्श व्यक्त किया है, उसे भी अल्पांश में प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया है।

चतुर्थ अध्याय :– पाश्चात्य संस्कृति एवं स्त्री विमर्श :–

इसके अंतर्गत सर्वप्रथम संस्कृति शब्द का अर्थ और महत्व बताया है। इसे जोड़ते हुए पाश्चात्य संस्कृति की तुलना भी संक्षेप में चित्रित की है। तथा पाश्चात्य संस्कृति से किस तरह भारतीय स्त्रियों पर प्रभाव होता है और फिर स्त्री विमर्श की दलीले सटिक रहती है या फीकी पड़ती है, यह भी दिखया है।

पंचम अध्याय :– क्या हैं आखिर में.......?

पुलिस बिक जाए, वकील बिक जाए और जज बिक जाए तथा फिर से किसी बेगुनाह को सजा मिल जाए और गुनाहगार स्वतंत्रता से घुमता रहे तथा गुनाह करता रहे........करता रहे।

हमें खेद हैं हमेशा से समाज व परिवार में नारी को दोयम व कनिष्ठ दर्जा दिया गया और उसके विकास में निरंतर बाधाएँ निर्माण की गई। उसकी इस गौण स्थिति में परिवर्तन कर पुरूषों के जैसा ही उसे भी समाज में सम्मान मिले इसके लिए स्त्रियों दवारा छेडी गई इसी लड़ाई को स्त्री विमर्श कहते हैं। नारी की स्थिति में परिवर्तन लाने के लिए सर्वप्रथम उसे शरीर से परे देखना आवश्यक है। स्त्री के गुणों को नजरअंदाज करते हुए सिर्फ उसकी जिस्मानी सुंदरता को ही देखा जाता है। किंतु जिस दिन स्त्री के गुणों को समूचित सम्मान से देखा जाएगा–उस दिन उसे व्यक्ति या मानव समझा जाएगा। बांगला लेखिका तसलिमा नसरीन कहती है–

"जिस दिन यह समाज स्त्री शरीर का नही, शरीर के अंग–प्रत्यंग का नही, स्त्री की मेधा और श्रम का मूल्य समझ जाएगा, सिर्फ उसी दिन स्त्री मनुष्य के रूप में स्वीकृत होगी।"

स्त्री विमर्श की यह तेज धारा अपने इन उद्येश्यों को प्राप्त करती है तो ही स्त्री विमर्श हमारे यहाँ सफलता की सीढी चढ रहा है ऐसा समझा जा सकता है। अंत मे स्त्री विमर्श के उद्येश्यों को बताते हुए हम हमारे प्रकल्प की समाप्ति करेंगे।

1. क्या स्त्री विमर्श स्त्री को व्यक्ति /मानव के रूप में प्रतिष्ठित करेगा....?

2. क्या नारी की सभी छोटी–बड़ी समस्याओं पर स्त्री विमर्श के अंतर्गत विचार किया जाता है?

3. नारी का सामर्थ्य अथवा क्षमता का प्रकटीकरण स्त्री विमर्श में होना जरूरी है–वह होता है क्या?

4. नारी के अस्तित्व को बचाने के सभी संभव प्रयास स्त्री विमर्श के अंतर्गत होते हैं क्या? या हो सकते हैं क्या....?

5. हर रोज पीड़ा के आँसू रोती हुई–लाज लूट जाने वाली बाला के आँसू पोछ सकेगा क्या हमारा स्त्री विमर्श? या फिर अब वो भी दिन आएगा क्या जब किसी बाला की सुरक्षितता का खतरा मंडराना बंद हो जाएगा?

6. स्त्री को आर्थिक अधिकारों से वंचित रखना बंद होगा क्या?

7. क्या स्त्री को पैतृक संपत्ति पर अधिकार मिल सकेगा?

8. क्या स्त्री की मानसिकता के विकारों को स्त्री विमर्श परिवर्तित कर सकेगा?

9. क्या अनमेल विवाह, दहेज के कारण वधु हत्या या माँ की कोख में पल रहे कन्या भ्रूण की हत्या बंद हो सकेगी?

10. और अंत में....लडकी पैदा होने पर घर–घर वंदनवार बंधेगी क्या...? जलेबी की जगह पेड़े बटेंगे क्या...? बैंडबाजे बजाकर किसी लडकी के जन्म पर उसका स्वागत होगा क्या?

अगर इन सभी सवालों के जवाब कुछ अंश में भी साकारात्मक होंगे तो जरूर समझा जाएगा कि स्त्री विमर्श सफलता की सीढी चढ रहा है। अन्यथा........स्त्रियों के अत्याचार का ग्राफ यूँ ही उच्चांक पर चढता जाएगा और खोखले स्त्री विमर्श होते रहेंगे।

Principal
Khorshedbanu R. Mewawala Mahila
(Arts & Commerce) Mahavidyalaya,
Vazirabad, Nanded 43[illegible]

(Objectives) उद्दिष्ट्यः-

२१वी सदी में स्त्री विमर्श

समाज में स्थित नारी की सामाजिक, राजनीतिक,आर्थिक परिस्थिती

समाज में आज भी दहेज प्रथा की समस्या

बेमेल विवाह समस्या

पती-पत्नी के रिश्तों मे टूटन, एवं बिखराव की समस्या

विधवा स्त्रीयोंकी समस्या

घटस्फोट की समस्या

बलात्कारीत स्त्रीयों की मनोवैज्ञानिकता

नौकरी पेशा या कामकाजी नारीयों के लैंगीक शोषण की समस्या

उच्चशिक्षीत नारीयों की समस्या

प्रौढ कुमारिकाओंकी समस्या

अवैध माताओंकी समस्या

पाश्चात्य संस्कृती का प्रभाव

नारी के मुक्त विचार

नारी स्वातंत्र्य

कॉन्ट्रॅक्ट मॅरेज

लिव्ह इन रिलेशनशिप

सरोगेट मदर

(Conclusion)निष्कर्षः

२१ वी सदी के हिंदी साहित्य मे चित्रित स्त्री विमर्श को उद्घाटित करना।स्त्री की अस्मिता, आस्तित्व एवं व्यक्ति समझकर पहचान होना। समाज का स्त्री की ओर देखनेका दृष्टीकोन, नजरिया बदलना। सामाजिक, राजनितीक, आर्थिक, धार्मिक, एवं पारिवारीक क्षेत्र में स्त्री का उत्थान होना। स्त्री को एक देह नहीं एक व्यक्ती के रुप में पुरुष के बराबरी से स्थान प्राप्त कराना यही एक लक्ष्य हैं। साहित्य मे स्त्री के अंतर्मन को खोलकर रखा गया है। इस शोध प्रकल्प के माध्यम से स्त्री की समस्या एवं समाधान को उजागर करना हैं यही उद्देश्य हैं।